the pioneer
LUCKNOW FRIDAY | JUNE 28, 2013

IISR to back Bangladesh in sugar production

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

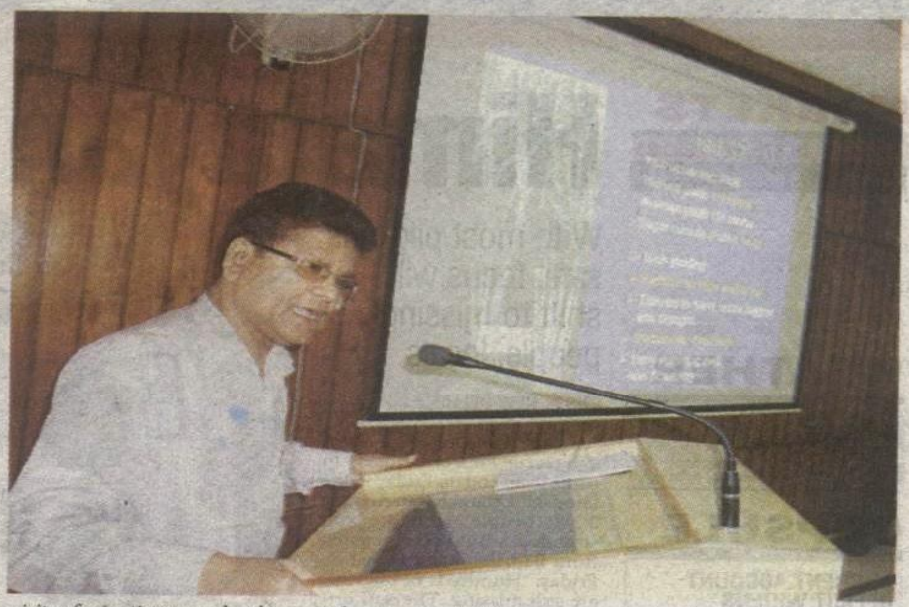

A high-level delegation led by Dr Kamal Humayun Kabir, Director General, BSRI, (Bangladesh Sugarcane Research Institute), Bangladesh, is on a week-long visit to IISR from Thursday for detailed interaction with scientists, study of sugarcane technologies developed by IISR and exploring areas of sugarcane research for joint collaboration.

The delegation led by Dr Kamal comprised Dr M Khalilur Rahman, Dr Shaikh Abdul Rahman, Mohammad Rafiqul Alam, Dr Shamsur Rahman and Dr Mohammad Jamsher Ahmed Khandker.

The week-long training and interaction visit of the Bangladeshi delegation at IISR began with a discussion which was organised at the conference hall of the institute on Thursday.

While presenting the Bangladesh sugar scenario, the DG, Dr Kamal, said that the cane yield there was very low i.e. about 50 tonnes per hectare and at present 1.5 to 2.0 lakh hectare area was under sugarcane producing only 6 lakh tonnes of sweetener against a total sweetener requirement of 20 lakh tonnes per year.

Along with a low yield poor recovery at 5 to 6 per cent in sugar would also worsen the situation which was also the culmination of poor post-harvest management and inadequate development work by the Sugar Mill Corporation in Bangladesh, he said.

Here he emphasised that vast experiences of scientists at IISR may help in increasing the sugarcane and sugar yield in Bangladesh.

Dr Kamal said that there may be a few potential areas like germplasm exchange, knowledge sharing, human resource development of scientists and industry personnel, visits of scientists to each other countries etc where the IISR and BSRI may enter into an MoU for joint collaborative work.

He also stressed the need for bringing all the sugarcane research institutes of Asia under the umbrella of one donor agency for a more fruitful and dividend-paying technology.

Dr AK Sharma at IISR presented an overview of IISR, its achievements, its organisational structure and the ongoing programme. The visit of the Bangladeshi delegation is being coordinated by Dr M Swapna, International Cooperation at IISR.

Dr S Solomon, Director, IISR, welcomed the delegates and highlighted the technological achievements of the institute, the challenges before the sugarcane and sugar sector in India and the future plans of the IISR to address them.

He said that the sugar industry in India was an important mechanism for socio-economic development in rural areas. This sector in India engaged 6 million farmers and 2.5 million skilled and non-skilled workers, he said.

Dr Solomon said that India had a rich infrastructure in the sugarcane and sugar sector with three Sugarcane Research Institutes, two Sugar Technology Institutes, 10 universities educating sugar technology, 6,000 industries in sugar machinery manufacturing etc.

To achieve the target of 600 metric tonnes of sugarcane and 36 metric tonnes of sugar by 2030, India has to produce sugarcane on 6 metric tonnes per hectare area with a 100 tonnes per hectare yield and sugar at 11 per cent recovery and the IISR has formulated the strategy, said Dr Solomon.

Dr AK Sah, Senior Scientist at IISR, said that it could offer technical support to the Bangladesh Sugarcane Research Institute in many areas of research, development, training, consultancy etc. The agro-techniques developed by IISR which include the ring-pit method of planting, can-node technique, sugarcane-based intercropping, bio-control of insects and pests and a three-tier seed programme may be quite helpful in increasing the yield of sugarcane in Bangladesh.

About a month ago three scientists of Bangladesh were trained at the IISR in latest technologies of sugarbeet and sugarcane cultivation.

The unparalleled research achievement and sugarcane technologies developed by the IISR for a sub-tropical climatic condition attracted Bangladesh Government. to send this high -level delegation to study and learn about the technology, development mechanism and the sugar industry here.

HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
FRIDAY, JUNE 28, 2013

INDIA, B'DESH TO JOIN HANDS ON SUGARCANE RESEARCH

HT Correspondent
lkoreportersdesk@hindustantimes.com

LUCKNOW: The Indian Institute of Sugarcane Research (IISR) has joined hands with the Bangladesh Sugarcane Research Institute (BSRI) for exploring areas of sugarcane research for joint collaboration.

A high level delegation led by Dr Kamal Humayun Kabir, director general, BSRI, Bangladesh, came to the IISR to begin a weeklong training and interaction.

A dialogue was organised on the issue on Thursday at the institute. The BSRI group will also study sugarcane technologies developed by the IISR. Dr S Solomon, director, IISR highlighted the technological achievements of the institute, challenges ahead before sugarcane and sugar sector in India.

The IISR future plans to address those challenges. He said that sugar industry in India was an important mechanism for socio-economic development in rural areas.

This sector in India engages 6 million farmers and 2.5 million skilled and non-skilled workers.

"India has rich infrastructure in sugarcane and sugar sector with 3 sugarcane research institutes, 2 sugar technology institutes, 10 universities educating sugar technology and 6000 industries in sugar machinery manufacturing," said Dr Solomon.

"To achieve the target of 600 mt sugarcane, 36 mt sugar by 2030, India has to produce sugarcane on 6 mt ha area with 100 t/ha yield and sugar @ 11% recovery, the IISR has formulated the strategy," said Dr Solomon.

Dr AK Sah, senior scientist at the IISR, said the IISR can offer technical support to BSRI in many areas of research, development, training, consultancy.

The agro-techniques developed by IISR, STP, ring-pit method of planting, can-node technique, sugarcane based intercropping, bio-control of insect-pests, may be quite helpful in increasing yield of sugarcane in Bangladesh.

www.samaylive.com

राष्ट्रीय सहारा

सच कहने की हिम्मत

राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण

दून • वाराणसी से प्रकाशित

लखनऊ। शुक्रवार • 28 जून • 2013

बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान के वैज्ञानिकों का दल लखनऊ में

लखनऊ (एसएनबी)। बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान के महानिदेशक डा. कमल हिमायूं कबीर की अध्यक्षता में उच्च अधिकारियों व वैज्ञानिकों का एक दल बृहस्पतिवार को लखनऊ स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान पहुंचा। यह दल तीन जुलाई तक यहां रहकर संस्थान की ओर से विकसित गन्ना उत्पादन तकनीकों, गन्ना विकास कार्यक्रमों व चीनी उद्योग के बारे में जानकारी व प्रशिक्षण हासिल करेगा।

इस दल में बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान की ओर ने डा. एम खलीलुर रहमान, डा. शेख अब्दुल मनान, रफीकुल आलम, डा. शमसुर रहमान, डा. शमशेर अहमद खान्डकर शामिल हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के आज पहले दिन परिचर्चा आयोजित की गयी जिसकी अध्यक्षता भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने किया। उन्होंने बताया कि संस्थान ने पिछले साठ वर्षों में गन्ना शोध में कई उपलब्धियां प्राप्त की हैं, जिसके योगदान से आज देश गन्ना एवं चीनी में आत्मनिर्भर है। वर्ष 2030 तक 6000 लाख टन गन्ना तथा 360 लाख टन चीनी की जरूरत को पूरा करने के लिए 60 लाख हेक्टेयर भूमि में सौ टन प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ना तथा 11 प्रतिशत की दर से चीनी उत्पादन करना होगा। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संस्थान ने शोध एवं विकास की रणनीति तैयार की है जिसे क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश तैयार किये जा रहे हैं।

■ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के साथ चीनी व गन्ना उत्पादन पर लेगा जानकारी

बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान के महानिदेशक डा. कमल हिमायूं कबीर ने बांग्लादेश में गन्ना शोध एवं विकास के वर्तमान परिदृश्य को उपस्थित वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा कि दोनों देशों के बीच साझा कार्यक्रम पर कार्य करने की असीम संभावनाएं हैं। बांग्लादेश में सकल घरेलू आवश्यकता 20 लाख टन मिठास का सिर्फ छह लाख टन ही देश में बनता है तथा शेष 14 लाख टन मिठास का आयात किया जाता है। कुल छह लाख टन में सिर्फ एक लाख टन चीनी व पांच लाख टन गुड़ बनता है। इसके साथ ही वहां गन्ना उपज 50 टन प्रति हेक्टेयर तथा चीनी परता पांच से छह प्रतिशत ही है जो भारत की तुलना में काफी कम है। उन्होंने कहा कि प्रजाति विकास, जर्मप्लाज्म आदान-प्रदान, ज्ञान एवं अनुभव का आदान-प्रदान, वैज्ञानिकों का एक-दूसरे देशों में भ्रमण, शोध एवं विकास में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों का क्षमता विकास कार्यक्रम इत्यादि विषयों पर आपसी सहमति से साझा कार्यक्रम की रूपरेखा तय की जा सकती है।

अमर उजाला | लखनऊ | शुक्रवार | 28 जून 2013

बांग्लादेश भारत से सीखेगा चीनी उद्योग की बारीकियां

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। भारत और बांग्लादेश के बीच गन्ने की खेती के विकास को लेकर इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगर केन रिसर्च (आईआईएसआर) में गुरुवार को साझा कार्यक्रम शुरू हुआ। इसके लिए बांग्लादेश के वैज्ञानिकों का एक दल हफ्ते भर के दौरे पर आया है। यह दल संस्थान द्वारा विकसित गन्ना उत्पादन तकनीकों, कार्यक्रमों और भारत के चीनी उद्योग के बारे में जानकारियां लेगा।

इस मौके पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने बताया कि आईआईएसआर में विकसित गन्ना उत्पादन की नई तकनीकों, बुआई विधियों, बीमारियों की रोकथाम, स्वास्थ्यवर्धक गुड़ उत्पादन तकनीक को बांग्लादेश में अनुकूल जलवायु के कारण अपनाया जा सकता है। इससे वहां उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी। आईआईएसआर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एके शर्मा और अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. एम. स्वप्ना ने माना कि भारतीय वैज्ञानिक और आईआईएसआर में हुए शोध बांग्लादेश में चीनी उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। प्रजाति विकास, जर्मप्लाज्म, जानकारियों और अनुभवों का आदान प्रदान तथा वैज्ञानिकों का एक दूसरे के देशों में भ्रमण जरूरी है।

इससे पहले संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इनमें डॉ. खलील उल रहमान, डॉ. शेख अब्दुल मनान, रफीक उल आलम, डॉ. शम्स उल रहमान, डॉ. शमशेर अहमद खांडकर शामिल हैं। इन सभी का नेतृत्व बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान के महानिदेशक डॉ. कमल हुमायूं कबीर कर रहे हैं।

दोनों देशों के बीच साझा गन्ना शोध होगा

तुलना : कौन कितना भीत

भारत

डॉ. सोलोमन ने बताया कि बीते 60 वर्षों में भारत ने न केवल गन्ना और शक्कर उत्पादन में आत्मनिर्भरता पाई है बल्कि तकनीकी व वैज्ञानिक उन्नति भी की है। वर्ष 2030 के लिए प्रति हेक्टेयर 100 टन गन्ना उत्पादन का लक्ष्य है। इसमें से 11 प्रतिशत चीनी का उत्पादन होगा। इस दौरान करीब 60 लाख हेक्टेयर भूमि से 6,000 लाख टन गन्ना उत्पादन और 360 लाख टन चीनी उत्पादन की जरूरत होगी।

बांग्लादेश

डॉ. कमल हुमायूं ने बताया कि बांग्लादेश में घरेलू जरूरत की 20 लाख टन चीनी व गुड़ में से सिर्फ छह लाख टन का ही उत्पादन हो पाता है। बाकी आयात होता है। उत्पादित छह लाख में भी पांच लाख टन का गुड़ बनाता है। प्रति हेक्टेयर 50 लाख टन चीनी का उत्पादन हो रहा है जो भारत की तुलना में बहुत पीछे है। बांग्लादेश के किसान गन्ना उत्पादन से पीछे हटने लगे हैं। आशंका है कि उत्पादन क्षेत्रफल में 25 प्रतिशत की गिरावट आएगी।

बांग्लादेश सीखेगा गन्ना खेती के गुर

- भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के साथ बना साझा कार्यक्रम

जाब्यू, लखनऊ : श्रीलंका के बाद अब भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक बांग्लादेश वालों को भी गन्ना खेती और चीनी उत्पादन के गुर सिखाएंगे। गुरुवार को सात दिवसीय दौरे पर पहुंचे बांग्लादेश गन्ना शोध संसाधन के प्रतिनिधिमंडल ने यूपी में गन्ना उत्पादन की बारीकियों पर चर्चा की। महानिदेशक डॉ. कमल हुमायूं कबीर के नेतृत्व में डॉ. एम खलीलुर रहमान, डॉ. शेख अबुल मनान, डॉ. भामसुर रहमान, रफीकुल आलम व डॉ.अहमद खांडेकर भी दल में शामिल है। बांग्लादेश प्रतिनिधिमंडल तीन जुलाई तक रहेगा। भारतीय वैज्ञानिकों से गन्ना उत्पादन के बारे में जानने के अलावा चीनी मिलों का स्थलीय दौरा भी करेंगे।

गुरुवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक सुनील सोलोमन की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वैज्ञानिकों ने सांझा कार्यक्रम बनाने पर सहमति जताई। वरिष्ठ वैज्ञानिक एके शाह ने बताया कि बांग्लादेश में गन्ना उत्पादन बढ़ाने की बेहतर संभावनाएं है।

वर्तमान में बांग्लादेश में जरूरत के सापेक्ष काफी कम चीनी उत्पादन होता है। स्थानीय जरूरत करीब 20 लाख टन की तुलना में बांग्लादेश केवल छह लाख टन चीनी का ही उत्पादन कर पाता है। गन्ना के उपज दर भी काफी कम है। औसतन प्रति हेक्टयर 50 टन गन्ना उत्पादन ही हो पाता है। गन्ने से चीनी का परता भी मात्र पांच से छह प्रतिशत होता है।

हिन्दुस्तान लखनऊ •शुक्रवार •28 जून 2013

बांग्लादेश तक पहुंचेगी भारत की मिठास

लखनऊ। गन्ने की अच्छी फसल उगाने के गुर सीखने बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान का प्रतिनिधि मंडल लखनऊ आया है। भारतीय गन्ना अनुसंधान और बांग्लादेश के प्रतिनिधिमंडल के बीच कई साझा कार्यक्रम तय हुए हैं।

बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान के महानिदेशक डॉ. कमल हुमायुं कबीर के अलावा प्रतिनिधि मंडल में डॉ. एम खलीलुर रहमान, डॉ. शेख अब्दुल मन्नान, फीकुल आलम, डॉ. शमसुर रहमान व डॉ. शमशेर अहमद खांडकर शामिल हैं। रायबरेली रोड स्थित गन्ना शोध संस्थान में आए ये विशेषज्ञ संस्थान की ओर से विकसित गिए गए गन्ने की तकनीकों और चीनी उद्योग के बारे में जानकारी हासिल करेंगे। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके शर्मा ने संस्थान की उपलब्धियों की जानकारी दी। निसं

गन्ना उत्पादन के लिए भारत-बांग्लादेश ने मिलाया हाथ

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान एवं बंगलादेश गन्ना शोध संस्थान के बीच साझा कार्यक्रम के साप्ताहिक दिवस का आगाज गुरुवार को राजधानी में हुआ। दो देशों के इस साझा कार्यक्रम के अन्तर्गत बंगलादेश गन्ना शोध संस्थान के महानिदेशक डा. कमल हिमायूं कबीर की अध्यक्षता में उच्च अधिकारियों का दल भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ में एक सप्ताह के (27 जून से 03 जुलाई, 2013 तक) प्रशिक्षण-अध्ययन कार्यक्रम भ्रमण कर रहे हैं। इस दल में डा. एम खलीलुर रहमान, डा. शेख अब्दुल मनान, रफीकुल आलम, डा. शमसुर रहमान, डा. शमशेर अहमद खान्डकर शामिल रहें। प्रशिक्षण कार्यक्रम में भ्रमण कर रहे वैज्ञानिकों/अधिकारियों को संस्थान द्वारा विकसित गन्ना उत्पादन तकनीकों, गन्ना विकास कार्यक्रमों तथा चीनी उद्योग के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी जायेगी। इस क्रम में कार्यक्रम की शुरूआत आज बंगलादेश के वैज्ञानिकों तथा संस्थान के वैज्ञानिकों के बीच वैज्ञानिक परिचर्चा आयोजित कर की

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ में प्रशिक्षण-अध्ययन कार्यक्रम भ्रमण का आयोजन

गयी जिसकी अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने किया। डा. सोलोमन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान में पिछले साठ वर्षों में गन्ना शोध में कई उपलब्धियां प्राप्त की हैं। जिसके योगदान से आज देश गन्ना एवं चीनी में आत्मनिर्भर है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2030 तक 6000 लाख टन गन्ना तथा 360 लाख टन चीनी की जरूरत को पूरा करने के लिए 60 लाख हेक्टेयर भूमि में 100 टन/हे. की दर से गन्ना तथा 11 प्रतिशत की दर से चीनी उत्पादन करना होगा। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संस्थान ने शोध एवं विकास की रणनीति तैयार की है जिसे क्रियान्वित करने के लिए तैयारी की जा रही है।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एके साह ने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित गन्ना उत्पादन तकनीक स्वास्थ्यवर्धक गुड़ बनाने एवं भंडारण की उन्नत विधि इत्यादि बंगलादेश के जलवायु परिवेश में उपयुक्त है जिससे गन्ना तथा चीनी का उत्पादन बढ़ सकता है। भारत में उपलब्ध संसाधनों एवं अनुभवों का लाभ उठाकर बंगलादेश अपने यहां गन्ना उत्पादन व्यवस्था तथा चीनी उद्योग को मजबूत कर सकता है।

डा. कबीर ने बंगलादेश में गन्ना शोध एवं विकास के वर्तमान परिदृश्य को उपस्थित वैज्ञानिकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा कि दोनों देशों के बीच साझा कार्यक्रम पर कार्य करने की असीम संभावनाएं हैं तथा यह बंगलादेश में चीनी उत्पादन को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक भी है। उन्होंने बताया कि हमारे यहां गन्ना उपज 50 टन प्रति हेक्टेयर तथा चीनी परता 5-6 प्रतिशत है जो कि भारत की तुलना में काफी कम है। बंगलादेश में गन्ना विकास का काम चीनी मिल निगम की देख-रेख में ही होता है जिसका प्रबंधन बेहद खराब है। डा. कबीर ने कहा कि वर्तमान समस्याओं के कारण वहां गन्ना तथा चीनी उत्पादन बढ़ नहीं रहा है जिस कारण बंगलादेश सरकार काफी चिन्तित है। इस दिशा में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के वैज्ञानिक अपने तकनीकी अनुभवों से बंगलादेश में स्थिति बेहतर करने में बहुमूल्य योगदान कर सकते हैं। डा. कमल ने इस मौके पर गन्ना शोध एवं विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आईआईएसआर के साथ साझा कार्यक्रम चलाने पर अपना प्रस्ताव रखा। इस अवसर पर संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डा. एके शर्मा ने संस्थान की उपलब्धियों, संगठन संरचना एवं वर्तमान में चल रहे शोध कार्यक्रमों पर एक संक्षिप्त परिचय मेहमानों के समक्ष प्रस्तुत किया। प्रशिक्षण-अध्ययन एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन एवं समन्वयन संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रकोष्ठ की प्रभारी डा. एम स्वप्ना द्वारा किया जा रहा है।

लखनऊ, शुक्रवार 28 जून, 2013

परख सच की

जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, कानपुर, गोरखपुर, वाराणसी एवं इलाहाबाद से प्रकाशित

आइआइएसआर और बांग्लादेश गन्ने की उपज बढ़ाने पर करेंगे शोध

आइआइएसआर में आयोजित बांग्लादेश के वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण अध्ययन भ्रमण कार्यक्रम के पहले दिन दोनों देशों के वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान के महानिदेशक डॉ. हुमांयू कबीर

लखनऊ। बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान के महानिदेशक डॉ. कमल हुमायूं कबीर ने कहा कि भारत ओर बांग्लादेश दोनों के बीच साझा शोध कार्य करने की असीम संभावनाएं हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आज आइआइएसआर और बांग्लादेश ने एक साथ मिलकर काम करने पर अपनी सहमति प्रदान कर दी है। अब आइआइएसआर और बांग्लादेश गन्ना शोध संस्थान गन्ना उत्पादन बढ़ाने पर मिलकर काम करेंगे। उन्होंने कहा कि यह बांग्लादेश में चीनी उत्पादन को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक भी है।

डॉ. कबीर की अध्यक्षता में बांग्लादेश के उच्चाधिकारियों का दल एक सप्ताह के प्रशिक्षण अध्ययन भ्रमण कार्यक्रम पर गुरुवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में पहुंचा। डॉ. कबीर वैज्ञानिक प्रशिक्षण अध्ययंन कार्यक्रम के पहले दिन वैज्ञानिकों को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि बांग्लादेश के सकल घरेलू आवश्यकता 20 लाख टन मिठास का सिर्फ 6 लाख टन ही देश में बनता है तथा शेष 14 लाख टन मिठास आयात किया जाता है। कुल 6 लाख टन में से सिर्फ 1 लाख टन चीनी तथा 5 लाख टन गुड़ बनता है। साथ ही वहाँ गन्ना उपज 50 टन प्रति हेक्टेयर और चीनी का उत्पादन 5-6 प्रतिशत है

उपलब्धि

बांग्लादेश के कृषि वैज्ञानिकों का दल आइआइएसआर पहुंचा

तकनीकी ज्ञान हासिल करेंगे बांग्लादेश के वैज्ञानिक

जो कि भारत की तुलना में काफी कम है। बांग्लादेश में गन्ना विकास का काम चीनी मिल निगम की देख-रेख में ही होता है जिसका प्रबंधन बेहद खराब है। जिस कारण शोध प्रक्षेत्र में गन्ना उपज 80 से 100 टन प्रति हेक्टेयर के बावजूद किसानों के खेतों पर उपज सिर्फ 40 से 50 टन प्रति हेक्टेयर है। इन सभी समस्याओं के कारण वहां गन्ना तथा चीनी उत्पादन बढ़ नहीं रहा है। इस कारण यहां सरकार काफी चिन्तित है। इस दिशा में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक अपने तकनीकी अनुभवों से बांग्लादेश में स्थिति बेहतर करने में बहुमूल्य योगदान कर सकते हैं।

इस मौके पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.अजय कुमार साह ने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित गन्ना उत्पादन तकनीक जैसे अन्तरालित प्रतिरोपण विधि, उच्च शर्करा युक्त गन्ना प्रजाति, उन्नत बुआई विधियाँ, बीमारी व कीटनाशकों का जैविक प्रबंधन, केन-नोड तकनीक, बुआई-कटाई एवं पेड़ी प्रबंधन गन्ना यंत्रों, स्वास्थ्यवर्धक गुड़ बनाने एवं भंडारण की उन्नत विधि इत्यादि बांग्लादेश के जलवायु परिवेश में उपयुक्त है, जिसके प्रयोग से गन्ना तथा चीनी का उत्पादन बढ़ सकता है। कार्यक्रम का संचालन व समन्वयन संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रकोष्ठ की प्रभारी डॉ.एम स्वप्ना ने किया। वसं.